Q.P. Code:00006888

(समय: ३ घंटे) **(कुल अंक : १००)**

सूचना: (१) सभी प्रश्न अनिवार्य है।

(२) उत्तरपत्रिका में प्रश्न क्रमांक व उपक्रमांक अवश्य लिखें।

प्रश्न १. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। **(२७)**

(क) जब-जब भवन बिलोकति सूनो।
तब तब बिकल होति कौसिल्या दिन-दिन प्रति दुख दूनो॥
सुमिरत बाल-विनोद राम के सुन्दर मुनि-मनहारी।
होत हृदय अति सूल समुझि पद, पंकज अजिर-बिहारी॥
को अब प्रात कलेऊ माँगत रूठि चलैगो, माई।
स्याम-तामरस-नैन स्रवत जल काहि लेऊँ उर लाई॥

अथवा

हाथ पर हाथ धरे हिन्दुस्तान की जनता बैठी है।
कभी-कभी सोचती है: देखो राम या अल्लाह।
किसके पल्ले बांधते हैं हम सब को।
हिन्दुस्तान ऐसा है।
बस जैसा-तैसा है।

(ख) जनता जगी हुई है।
भरत-भूमि में किसी पूण्य-पावक ने किया प्रवेश।
धधक उठा है एक दीप की लौ-सा सारा देश।
खौल रहीं नदियाँ, मेघों में शम्पा लहक रही है।
फट पड़ने को विकल शैल की छाती दहक रही है।
गर्जन, गूंज, तरंग, रोष, निर्घोष, हांक, हुंकार !
जानें, होगा शमित आज क्या खाकर पारावार !

अथवा

अब भी पशु मत बनो,
कहा है वीर जवाहरलाल ने।
अंधकार की दबी रौशनी की धीमी ललकार;
कठिन घड़ी में भी भारत के मन की धीर पुकार।
सुनती हो नीगिनी ! समझती हो इस स्वर को?
देखा है क्या कहीं और भू पर उस नर को –
जिसे न चढ़ा जहर,

XSAGARDADMINYCF9600XSAGARDADMINYCF9600

न तो उन्माद कभी आता है;
समर-भूमि में भी जो
पशु होने से घबराता है?

(ग) दुर्गम वनों और ऊँचे पर्वतों को जीतते हुए
जब तुम अन्तिम ऊँचाई को भी जीत लोगे-
जब तुम्हें लगेगा कि कोई अन्तर नहीं बचा अब
तुममें और उन पत्थरों की कठोरता में
जिन्हें तुमने जीता है -
जब तुम अपने मस्तक पर बर्फ़ का पहला तूफ़ान झेलोगे
और काँपोगे नहीं -
तब तुम पाओगे कि कोई फ़र्क़
नहीं सब कुछ जीत लेने में
और अन्त तक हिम्मत न हारने में।

अथवा

अबकी अगर लौटा तो
हताहत नहीं
सबके हिताहित को सोचता
पूर्णतर लौटूँगा।

प्रश्न २. निम्नलिखित दीर्घोत्तरी प्रश्नों के उत्तर लिखिए। **(३६)**

(च) 'कबीरदास निर्गुण ज्ञानमार्गी शाखा के कवि थे।' इसे उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'एक छोटा सा – अनुरोध' कविता के उदेश्य को स्पष्ट कीजिए।

(छ) 'परशुराम की प्रतीक्षा' प्रथम खण्ड के भावार्थ को अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

'हिम्मत की रोशनी' कविता में प्रस्तुत सकारात्मकता एवं आशावादी संदेश पर प्रकाश डालिए।

(ज) 'अंतिम ऊँचाई' कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'घर रहेंगे' कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं, सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

XSAGARDADMINYCF9600XSAGARDADMINYCF9600

प्रश्न ३. निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए। (१२)

(प) 'बाजारो की तरफ भी' कविता के माध्यम से कवि ने अनावश्यक वस्तुओं के प्रती अनासक्ति दिखाई है। स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'समर शेष है' कविता के आधार पर भारत की तत्कालीन परिस्थितियों की विवेचना कीजिए।

अथवा

सूरदास की भक्ति भावना को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित विषयो पर टिप्पणी लिखिए। (१५)

(त) बिहारी जी की सगुण ब्रह्मा की उपासना को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'नदी और साबुन' कविता में चित्रित समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

(थ) 'लोहे का मर्द' कविता के शीर्षक की सार्थकता लिखिए।

अथवा

'आज कसौटी पर गाँधी की आग है' कविता का संदेश लिखिए।

(द) 'स्पष्टीकरण' कविता का कथ्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'क्या वह नहीं होगा' कविता में निहित कवि की चिंता को व्यक्त कीजिए।

प्रश्न ५. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए। (१०)

१. 'कनक-कनक' से बिहारी जी का क्या तात्पर्य है?
२. 'बाजारो की तरफ भी' कविता में कवि किन्हें आमंत्रित करते हैं?
३. 'स्पष्टीकरण' कविता में कवि विषम घड़ी में किसे साक्षी बनाने को कहते हैं?
४. 'घर रहेंगे' कविता में कवि अचानक किसके बीत जाने की बात करते हैं?
५. कवि त्रिलोचन जी का मूल नाम क्या है?
६. किसके जुठारने से नदी का पानी दूषित नहीं होता?
७. घर में काठ का बना कौनसा समान है?
८. 'लोहे का मर्द' कविता में सीमा से कौन लौट कर आया होगा?
९. 'जनता जगी हुई है' कविता में हिमालय की शिखर से कौन उतर रहा है?
१०. 'अंतिम ऊँचाई' कविता में कवि किस किसमें अन्तर न होने की बात करते हैं?

****

XSAGARDADMINYCF9600XSAGARDADMINYCF9600